तो कैसे दूर हो कुपोषण

October 27, 2013

Tweet

सहरिया क्षेत्र में आंगनबाड़ी केंद्रों का नहीं होता सुचारू संचालन

- बाबूलाल नागा

अच्छी से अच्छी योजना, नीति व कानून तभी कारगर होते हैं जब उसकी मॅानिटरिंग व्यवस्था अच्छी हो। क्रियांविति पर नजर हो और शिकायतों का तुरंत निराकरण हो। कोताही करने वालों को दंडित किया जाए और जवाबदेही सुनिश्चित हो। बच्चों को कुपोषण से मुक्त करने की विश्व की सबसे बड़ी योजना समग्र बाल विकास योजना (आईसीडीएस) में न मॅानिटरिंग व्यवस्था सुचारू है और न ही कोई जवाबदेही दिखती है। कम से कम सहरिया बाहुल्य क्षेत्र में तो ऐसा ही कुछ दिखाई देता है। बच्चों में कुपोषण मिटाने के लिए सहरिया क्षेत्र किशनगंज शाहाबाद उपखंड में संचालित आंगनबाडी केंद्र अव्यवस्थाओं की शिकार है। न यह केंद्र समय पर खुलते हैं और न ही बच्चों को पर्याप्त पोषाहार मिल पाता है।

किशनगंज में महिला बाल विकास की ओर से संचालित करीब 50 से अधिक आंगनबाड़ी केंद्र किराए के भवनों में चल रहे हैं। शेष लगभग सौ आंगनबाड़ी केंद्र भवनों को प्राइमरी स्कूलों में संचालित किया जा रहा है। इनमें से कुछ भवन जीर्ण क्षीर्ण और बाकी रहने के अनुरूप नहीं होने से परेशानी बनी हुई है। कई जगह तो स्थिति यह है कि आंगनबाड़ी केंद्र एक ही कमरे में संचालित हो रहा है। इसमें बच्चों को पढ़ाने के बाद पोषाहार भी उसी कमरे में दिया जाता है। इन जीर्ण क्षीर्ण भवनों में बारिश के दिनों में पानी छतों से टपकता है। कहीं कच्चे भवनों में चल रहे केंद्रों का बारिश में ढहने का डर भी सताता रहता है। इनमें पर्याप्त रोशनी तथा बैठक की भी समुचित व्यवस्था का अभाव है। अधिकांश केंद्रों पर बच्चों के बैठने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। महिला बाल विकास विभाग की गाइड लाइन के अनुसार आंगनबाड़ी केंद्र के लिए एक बड़ा कमरा, स्टॅाक कक्ष, बरामदा तथा किचन होना चाहिए। इसके बावजूद क्षेत्र में संचालित आंगनबाड़ी केंद्रों में इस प्रकार की सुविधाएं कम ही केंद्रों में देखने को मिलती है।

शाहाबाद तहसील की मडी सांभरसिंगा गांव में 35 सहरिया परिवार रहते हैं। 3 से 5 वर्ष की आयु के करीब 50 बच्चे हैं लेकिन इस गांव में न मिनी आंगनबाड़ी केंद्र है और न ही आंगनबाड़ी केंद्र। तीन किलोमीटर सांधरी गांव में आंगनबाड़ी केंद्र है। जहां बच्चे जा नहीं पाते। बीलखेड़ा डांग की आंगनबाड़ी केंद्र सहायिका मक्को बाई के भरोसे चल रही है। यहां की आंगनबाड़ी सकून गोयल कार्यकर्ता सप्ताह में एक दिन ही केंद्र पर आती है। वह देवरी गांव में रहती है। किशनगंज क्षेत्र के सुवांस में तैनात आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अनपढ़ हैं। ऐसे में न वह सरकारी सूचनाएं पढ़ पाती है और न ही समय पर सूचनाएं भेज पाती है। सुवांस ग्राम पंचायत में 9 आंगनबाड़ी केंद्रों पर अनपढ़ कार्यकर्ताएं लगी हुई हैं। इनमें से कुछ तो बुजुर्ग हैं, जो कार्य करने में असक्षम है। ऐसे में कुपोषण की सूचना भी उच्चधिकारियों तक नहीं पहुंचती और बच्चों की जान पर बन आती है। करीरिया गांव में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता दूसरे गांव से आती है। इसके चलते केंद्र पर अधिकांश समय ताला लगा रहता है। ऐसे में बच्चों को पोषाहार ही नहीं मिल पाता। शाहाबाद क्षेत्र की सनवाड़ा गांव की आंगनबाड़ी केंद्र कार्यकर्ता प्रेमलता बुजुर्ग है। इस केंद्र को आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का पुत्र अनील चला रहा है। केंद्र का पूरा रिकॅार्ड उसी के पास रहता है। किशनगंज क्षेत्र की बींची ग्राम पंचायत के गाडरईसाटोरी गांव की आंगनबाड़ी केंद्र पर सूचना पट्ट पर केंद्र पर आने वाले लाभार्थियों, गर्भवती व धात्री महिलाओं की संख्या लिखी हुई नहीं है। सूचना पट्ट खाली है।

क्षेत्र की कई आंगनबाड़ी केंद्रों की कार्यकर्ताओं को यह पता नहीं है कि केंद्र पर कितने छोटे व बड़े बच्चे पंजीकृत हैं। इनमें से कितने कुपोषित/अतिकुपोषित बच्चे हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों पर कभी कभार ही पोषाहार मिलता है। केंद्र की कार्यकर्ता या तो केंद्र खोलती ही नहीं है। यदि खुल भी जाए तो कभी कभार ही पोषाहार बनता है। गणेशपुरा के लोगों ने बताया कि यहां संचालित आंगनबाड़ी केंद्र का भवन नहीं होने के कारण कार्यकर्ता घर पर ही चलाती है जो कभी तो पोषाहार देती है और कभी नहीं।

प्रतिमाह 80 लाख रुपए खर्च

बच्चों को कुपोषण से मुक्त करने के लिए सरकार पोषाहार व दवाइयां आदि पर प्रतिमाह करीब 80 लाख रुपए खर्च कर रही है। महिला एवं बाल विकास की ओर से बारां जिले में 0 से 6 वर्ष तक के करीब सवा दो लाख बच्चों की प्रोटीनयुक्त पोषाहार वितरित किया जाता है। इसके लिए प्रतिमाह करीब साढ़े 83 लाख रुपए का बेबी मिक्स, खिचड़ी एवं दलिया दिया जा रहा है। इसके अलावा प्रतिमाह साढ़े पांच लाख रुपए की दवाइयां आदि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से दी जा रही है। इनमें से करीब 80 लाख रुपए तो प्रतिमाह 0 से 5 साल के बच्चों पर पोषाहार व बेबी मिक्स आदि पर खर्च होते हैं।

ये मिलता है पूरक पोषाहार

बारां जिले में कुपोषण दूर करने के लिए आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से बच्चों, गर्भवती व धात्री महिलाओं को पूरक पोषाहार वितरण किया जा रहा है। आदेशों के तहत 0-3 वर्ष के सामान्य बच्चों को प्रतिदिन हलवा प्रीमिक्स 120 ग्राम, पंजरी 125 ग्राम व अतिकुपोषित बच्चों को हलवा 240 व पंजरी 125, 3-6 वर्ष के सामान्य बच्चों को हलवा प्रीमिक्स 51 व उपमा 42 ग्राम, अतिकुपोषित को हलवा 78 व उपमा 70 ग्राम, गर्भवती धात्री महिलाओं व किशोरी बालिकाओं को हलवा 140 व उपमा प्रीमिक्स 130 ग्राम दिया जाता है।

वेबसाइट पर पुराने आंकड़े

बच्चों को कुपोषण से मुक्त करने का दावा करने वाले कार्यालय, उप निदेशक महिला एवं बाल विभाग, बारां स्वयं ही कुपोषित हो चुका है। विभाग की वेबसाइट पर आज भी जून 2011 के ही आंकड़े मौजूद हैं। इसके बाद यह वेबसाइट कभी अपडेट ही नहीं की गई। विभाग की ओर से

वेबसाइट पर आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से दी जाने वालीे छह सेवाओं पूरक पोषाहार, टीकाकरण, स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा, स्कूल पूर्व शिक्षा, संदर्भ सेवा व वृद्धि निगरानी के बारे में जानकारी दी गई है। उक्त छह सेवाओं की क्रियांविति के लिए बारां जिले में आंगनबाड़ी केंद्रों का संचालन किया जा रहा है। इस संदर्भ में वेबसाइट पर पुराने आंकड़े ही दिए हुए हैं। (यह रिपोर्ट इंक्लूसिव मीडिया फैलोशिप के अध्ययन का हिस्सा है)

Tweet

Permalink

© Copyright 2012 -Dailyrajasthan.com.com. All Rights Reserved
Designed by:- How I Host

शहजादे पर फिर बरसे मोदी